अन्त तरणा रे संत सिंगाजी भजन लिरिक्स

अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरणा रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

रूप स्वरूप कि बनी सुंदरी,
माया देख नही भूलना,
यो परदेसी फिर नही आवे,
लख चौरासी फिरना,
अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरना रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

व्यर्थ जनम गया रे बहु तेरा,
माया मे लुभाना रे,
श्रवण नाम नही कियो हरि को,
भेष धरि धरि मरणा,
अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरना रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

धन दौलत ओर माल खजाना,
पल मे होय वीराना,
अल्टी पवन चले घट भीतर,
उनका करो ठिकाना,
अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरना रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

साधु के तो अधीन रहना,
उपाय कभी नही करना,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

कहे जन सिंगा सुनो भाई साधो,
रहो राम की शरणा,
अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरना रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

अन्त तरना अन्त तरना,
अन्त तरणा रे,
निज नाम का सुमरण करणा,
अंतर तरना रे।bd।

गायक – संतोष जी महाराज।
प्रेषक – घनश्याम बागवान सिद्दीकगंज।
7879338198

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com